Special Issue January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

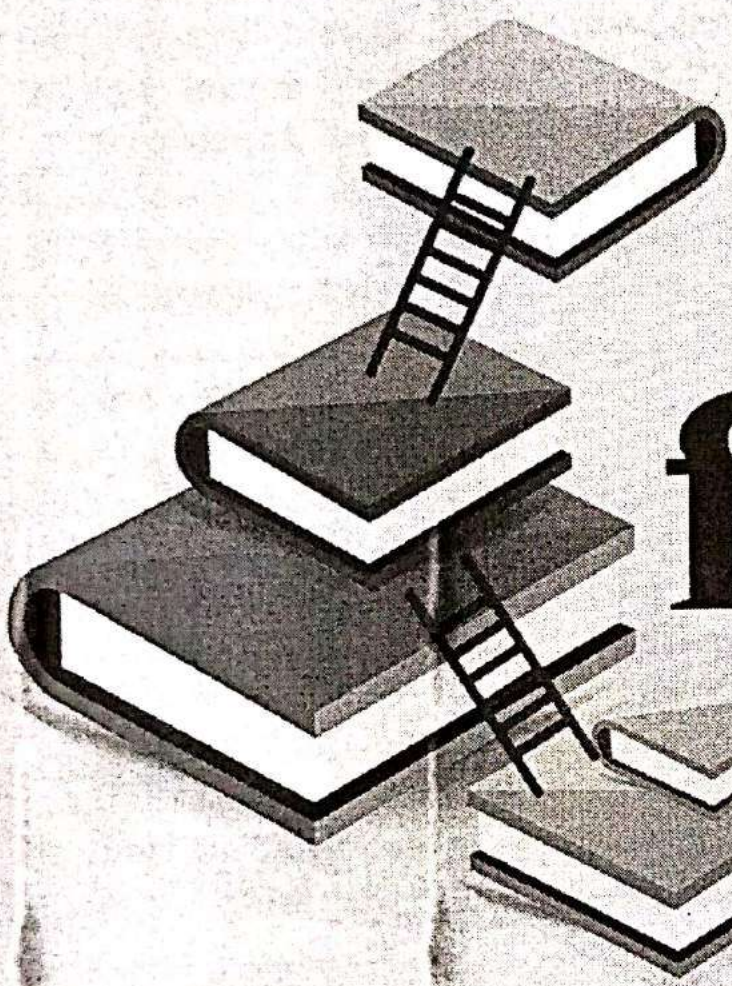

साहित्य और समाज चिंतन

संपादक
प्रा.नवनाथ जगताप

सहसंपादक
डॉ.अनिल कांबळे

Scanned with OKEN Scanner

48) ममता कालिया के कहानी साहित्य में नारी चेतना
प्रा राजेंद्र ज्ञानदेव ननावरे, सातारा ||135

49) नई सदी के प्रथम दशक के 'टूटने के बाद' उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ
प्रवक्ता. अनुशर्मा, बेंगलोर ||136

50) इंसानी मोहब्बत की पैगाम : जिंदा मुहावरे
Suryakant M. B., Kalburagi ||139

51) 'रेहन पर रग्घू' : बाजारवादी संस्कृति और दम तोड़ता समाज
प्रा. दादासाहेब खांडेकर, सोलापुर ||142

52) हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श तथा इसकी महत्ता
डॉ. शीला भास्कर, हुबली ||144

53) राकेश कुमार सिंह के उपन्यासों में अभिव्यक्त आदिवासी स्त्री समाज और संस्कृति
डॉ. मधुकर लक्ष्मण डोंगरे, टोकावडे ||147

54) डॉ. सादीका सहर की कहानियों में चित्रित मुस्लिम पात्र
डॉ. जावेद तांबोळी, मंगलवेढ़ा ||149

55) अनामिका की कविताओं में नारी विमर्श
प्रा.डॉ. सुनील एम. पाटिल, धुलियॉ ||150

56) हिन्दी कविता : किसान एवं मजदूर जीवन तथा विप्लव का चित्रण
डॉ. बबन सातपुते, मिरज ||152

57) आदिवासी सामाजिक प्रवृत्ति एवं स्वभाव
Dr. Santosh Motwani , Ulhasnagar ||156

58) हाशिर का समाज में नारी विमर्श (अंतिम दशक के संदर्भ में)
डॉ. दत्ता साकोळे, उस्मानाबाद ||160

59) हिंदी की आत्मकथाओं में दलित विमर्श
प्रा. आडे तुकाराम बसराम , हिंगोली ||161

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with OKEN Scanner

58

हाशिर का समाज में नारी विमर्श

(अंतिम दशक के संदर्भ में)

डॉ. दत्ता साकोळे
प्रपाठक हिन्दी विभाग,
शि.म.ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय कलम, जि. उस्मानाबाद

नारी प्रकृति का सुंदरतम उपहार है। नारी सृष्टि का आधार होने के कारण उसे विधाता की अद्वितीय रचना काहा जाता हे। नारी समाज, संस्कृति और साहित्य का महत्वपूर्ण अंग है। मानवीय गुणों को दृष्टि से विचार किया जाए तो नारी अधिक मानवीय है। इन सारे गुणों के होते हुए भी नारी को समाज और संस्कृति में वह स्थान नहीं मिला जिसकी वह अधिकारिणी है। पुरुष प्रधान व्यवस्था ने नारी को सदैव आधिकार से वंचति रखा। प्राचीन काल से लेकर अब तक नारी ने किसी न किसी रुप में अपनी स्थिति का मुकाबला किया है नारी ने समस्याएँ, परिस्थितियाँ चाहे जो भी वह परिस्थिति रुप चेतना को जगाया है। बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक तक अधिक, सामाजिक और वैज्ञानिक प्रगति के कारण समाज में बहुत बडा परिवर्तन हुआ। नारी में भी स्वतंत्रता की भावना विकसित हुई। वह अपने व्यक्तित्व के प्रति सचेत हुई। अन्याय का विरोध कर न्याय और समता पर आधारित साझा निर्माण के लिए उसने प्रयत्न प्रारंभ किए जिससे एक सुखद भविष्य का निर्माण संभव हो। अंतिम दशक में तेजी से परिवर्तित समाज के साथ-साथ, महिला आंदोलनों तथा संगठनों के कारण मध्यवर्गीय नारी में भी नई चेतना जागृत हुई।

भारतीय और पश्चिमी समाज में स्त्री शब्द और उसके अस्तित्व को लेकर आरंभ से ही दो तरह की धारणाएँ प्रचलित हैं एक श्रध्दा के रुप में और दूसरी वस्तु। जहाँ भी स्त्री का संदर्भ श्रध्दा से हो रहा है, वहाँ उसका अस्तित्व एक ऐसी नारी के रुप में मान्य है, जो जननी होने का कारण सर्वत्र सम्मान की दृष्टि से देखी जाती रही है और जिसका महत्त्व समाज में हमेशा स्थिर रहा है लेकिन आगे सामंती और पूँजीवादी समाज ने धीरे-धीरे पहले तो स्त्री के वर्चस्व को खत्म किया। परिवर्तन प्रकृति का नियम है। कोई भी स्थिति अधिक समय तक स्थिर नहीं रहती। परिस्थिति के अनुसार परिवर्तित होती है। यही परिवर्तन तत्कालीन कहानीकारों में भी आता है। सभी कहानीकार संवेदनशील रचनाकार होने के कारण नारी के चरित्र किया है। खासकर के महिला कथाकारों ने नारी-जीवन को सूक्ष्मता से देखकर स्वयं नारी होने के नाते हाशिर का समाज मे कहानियों में नारी चेतना की कलात्मक ढंग से अभिव्यक्त किया है।

सामंती युग में पुरुष समाज ने स्त्रियों को लगभग उनके सारे स्वतंत्रताओं और सामाजिक आचरणों पर बंदिशें लगायी गई, जो वे चाहती थीं। दूधनाथ सिंह माई का शोकगीत, चित्रा मुद्गल की लकडबग्घा, मिथिलेश्वर की तिरिया जनत आदि सामंती समाज में स्त्री-पुरुष के निजी और सामाजिक आचरण की इन्हीं अलग-अलग बंदिशों की ओर संकेत करती हैं लेकिन स्त्री को लेकर लगाई गई बिंदिशें यहीं आकर समाप्त नहीं हुई, बल्कि स्थितियाँ इस तरह बदली कि सामाजिक जीवन में पुरुष के बिना स्त्री का अस्तित्व नकारा जाने लगा धीरे-धीरे उन्हें या तो किसी की पुत्री के रुप में पहान मिली या पत्नी अथवा माँ के रुप में परंतु ऐसा नही था कि पूर्व में उन्हें किसी की पुत्री, पत्नी अथवा माँ के रुप में नहीं जाना जाता था परंतु आधुनिक सभ्यता के आगमन और उसके विकास के साथ-साथ स्त्री की तस्वीर भी बदलती गयी। कुलीन घरानों से संबध्द और आर्थिक रुप से संपन्न स्त्रियों का अस्तित्व तो कुछ बचा रहा, परंतु निम्नवर्ग खासकर दलित वर्ग की स्त्रियों की स्थिति और भी बदतर होती गयी। एक ओर जहाँ वे स्त्री होने के नाते सामाजिक जीवन की मुख्यधारा में अपने आपको असुरक्षित महसूस करने लगी वहीं दूसरी ओर अपनी जातीय स्थिति के कारण वे दोहरे अत्याचार, शोषण और अपमान का शिकार बनी। अंतिम दशक के पूर्व इन सारी स्थितियों का वर्णन कहानीकारों ने किया है लेकिन जैसे-जैसे वक्त बदलता गया नारी चेतना भी बदली, अंतिम दशक की कहानियों में नारी चेतना का स्वरुप ही बदल गया।

अंतिम दशक में जो परिवर्तन हुआ उसमें विज्ञापन की अहम भूमिका है। विज्ञापन में जिस प्रकार नारी समाज को प्रस्तुत किया जाता है, वह वास्तव में उपभोक्तावादी समाज और उसकी संस्कृति का एक हिस्सा बन गया है। विज्ञापनों की दुनिया में काम करनेवाली ये स्त्रियाँ उन विशिष्ट सामाजिक वर्ग के लिए वस्तु मात्र है और उनका उपयोग करना उस समाज के दैनिक जीवन का मात्र एक व्यवहार यह आश्चर्य है कि इस बात को आज दोनों वर्ग समझ रहे हैं फिर भी यह व्यवसाय फल-फूल रहा है। निम्न वर्ग के अलावा वेश्यावृत्ति के व्यवसाय में जो स्त्रियाँ संलग्न है वह इन्हीं

Scanned with OKEN Scanner

विज्ञापनों की दुनिया और उस दुनिया में प्रवेश करने के इच्छुक युवतियों का एक बडा समूह है जिसे हम लोग काल गर्ल्स के रुप में जानते हैं। काल गर्ल्स में संलग्न अधिकांश युवतियाँ उन छात्रावासों और घरों से आती हैं, जहाँ केवल उपभोक्तावादी वस्तुओं और सौंदर्य प्रसाधन की सामग्रियों को प्राप्ति के लिए युवतियाँ पहले तो इसे शौक के रुप में अपनाती हैं, बाद में यह पेशा करना उनकी आदत बन जाती है। खुद युवतियाँ तो मात्र सेक्स के आनंद का अनुभव करने के लिए जिज्ञासावश इस चक्रव्यूह में फँसती हैं तथा बाद में इनकी होकर रह जाती हैं। परितोष चक्रवर्ती की कहानी सडक और जिंदगी, दृष्टि परिवर्तन रामनारायण शुक्ल की महानगर के बोंच, सूरज प्रकाश की आँख-मिचौली, गोविंद मिश्र की खुश के खिलाफ, चित्रा मुद्गल की फातिमा बाई कोठे पर नहीं रहती, स्वदेश दीपक की मुस्कान आदि कहानियाँ नारी जीवन के समस्याओं को सामने रखती हैं। इसके अलावा अंतिम दशक में अनेक कहानीकार हैं जिन्होंने नारी के पवित्र रुप को दर्शाया है- जान गई तो परवाह नहीं लेकिन अब्रू की इज्जत करना कर्तव्य समझती है- ऐसी ही एक कहानी है-

'कृष्ण कुमार आशु' की कहानी 'एक बोतल खून' नारी चेतना को चित्रित करती है। अपनों का मोह भी कितना प्यारा होता है। सबकुछ जानते हुए भी मन मानता नहीं है। रेवती और माधव पति-पत्नी हैं। माधव टी.बी से ग्रस्त है। डॉक्टर ने कह दिया कि यह बच नहीं सकता। यदि थोडे दिन बचाना हो तो हर महिने एक खून की बोतल चढाना होगा। रेवती बेचारी घर का सारा सामान एक-एक करके बेचती है और दवा-दारु करती है लेकिन जब सब कुछ समाप्त होता है। रिश्तेदार भी मुँह मोड़ते हैं तो उसे अपना जीवन अंधकारमय नजर आता है माधव है तो कम से कम उसकी ओर बुरी नजर से तो कोई नहीं देखेगा। मर जाएँगे तो समाज में सभ्रांत भेडियें उसे निगल जाएँगे। अभी कम से कम उसकी माँग का सिंदूर सलामत है।

खून के रिश्ते भी एक बोतल खून देने को तैयार नहीं होते। ऐसे में रेवती रक्तदान संगठनवालों के पास जाती है। वहाँ पर निराश होना पडता है, और कहा जाता हे यदि आप संगठन के अध्यक्ष के पास जाएँगी तो आपको खून मिल सकता है। ज अध्यक्ष के पास जाती हे तो वहाँ उसकी लाल-लाल आँखों से उसको घूरता नजर आता है। उसे वासना की नजर से देखता हे और कहता है कि आप रात में आइए तो जितना रक्त चाहिए दिलवा दूँगा। रेवती प्रभाकर के घिनौने इरादों को समझ जाती है और एक तरफ उसका अस्तित्व था तो दूसरी ओर उसका सतीत्व रातभर सोचती रही कि क्या करे। प्रभाकर के पास जाए या सती चले जाए। एक बोतल खून पर टिका था रेवती का अस्तित्व और सतीत्व। लेकिन सुबह का सूरज निकलता है रेवती अंतर्द्वंद्व से उभर चुकी थी। अस्तित्व और सतीत्व दोनों जीत गए थे। हाँ रेवती हार गई थी। वह सरकारी अस्पताल की लैबोरेट्री में बेड पर लेटी थी। उसकी बाँह मे लगी निडिल के माध्यम से रक्त की पतली लकीर बोतल में जा रही थी।

यहाँ रेवती ने अपने गिरते स्वास्थ्य से भी खून के बदले खून लेने के लिए खून देती है। इसका दूरा कारण यह है कि चरित्र को गिराने से अच्छा पति के साथ-साथ अपने आपको भी भगवान के हवाले करना बेहतर समझती है रेवती। अंतिम दशक की कहानियों में हाशिर के समाज में वंचित महिलाओं के जीवन का चित्रण किया गया है।

१. परदेशीराम वर्मा - औरत खेत नहीं, कहानी संग्रह, पृ.सं. ५९-६०
२. मधुमती - मासिक पत्रिका - जुलाई -९९ पृ.सं. ५८
३. मधुमती - मासिक पत्रिका - जुलाई -९९ पृ.सं. ५८
४. अलका सरावगी - उद्विगता का एक दिन, पृ.सं. १०५
५. चित्रा मुद्गल - प्रमोशन (जगदंब बाबू गाँव आ रहे हैं - कहानी संग्रह), पृ.सं. ७३
६. केशव - दरवाजे वागर्थ - मई - १९९७

❑❑❑

Scanned with OKEN Scanner